Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 9 | ISSUE : 3 | SPECIAL ISSUE MARCH-2023

वैश्वीकरण की प्रक्रिया एवं पर्यटन उद्योग पर प्रभाव

नारायण कुमार सहायक आचार्य, राजकीय महाविद्यालय, सांचौर, जालौर

ABSTRACT:

वर्तमान समय में सामाजिक संबंध जो पहले गांव या अधिक से अधिक अपने अंचल तक सीमित थे, अब दुनिया भर के साथ जुड़ गए। इस बदलती हुई दुनिया में समय और स्थान अप्रांसगिक हो गए हैं। देखते ही देखते सात समुद्र पार करके व्यक्ति यूरोप की यात्रा करने पहुँच जाता है। दुनिया के किसी भी कोने स बातचीत कर सकता है। वैश्वीकरण को एथेनी गिडिन्स दुनिया भर के लोगों के साथ संबंध का तीव्रीकरण कहते है। स्थानीय संबंधों में भी हजारों मील दूर रहने वाले लोगों का प्रभाव पड़ता है। वैश्वीकरण इस दृष्टि से आधुनिकता से जुड़ा हुआ है। आधुनिकता का फैलाव वैश्वीकरण के कारण होता है। इसको व्याख्या एंथेनी गिडिन्स (2002) ने इन शब्दों में की है–"दुनिया भर के लोगों, क्षेत्रों और देशो के बीच में सामाजिक और आर्थिक संबंधों की जो अन्योन्याश्रितता है, वही वैश्वीकरण है।" वैश्वीकरण का पर्यटन पर जितना प्रभाव पड़ रहा है शायद ही किसी उद्योग पर इसका प्रभाव हो रहा होगा।

KEYWORDS:

पर्यटन, उद्योग, वैश्वीकरण, सांस्कृतिक, सैद्धान्तिक, एकीकरण।

यदि हम आधुनिक समाज को और हमारे स्वयं के प्रतिदिन के काम करने की दशाओं को देखें तो ज्ञात होगा कि हम सारी दुनिया के साथ जुड़े हुए है। वैश्वीकरण एक शक्तिशाली प्रक्रिया है और इसके अभाव में हम आधुनिकता को नहीं समझ सकते है। वैश्वीकरण कोई रातों–रात दुनिया में आ गया हो ऐसा नहीं है। इसकी विकास की अवस्थाएँ रही है। अपनी पहली अवस्था में वैश्वीकरण ने दुनिया में एक भौतिक एकता को स्थापित कर दिया और आज की अवस्था में संपूर्ण दुनिया को एक व्यवस्था के रूप में बदल दिया है। इसका यह अर्थ नहीं समझा जाना चाहिए कि संपूर्ण में एक ही संस्कृति हो गई या सांस्कृतिक सजातीयता स्थापित हो गई हो और न ही ऐसा हुआ है कि दुनिया भर में कोई राजनीतिक एकीकरण हो गया हो। यह सब नहीं हुआ है, हुआ यह है कि वैश्वीकरण ने ऐसी स्थितियाँ पैदा कर दी है जिनमें अब लोगों में चेतना आ गई है कि उनके लिए अन्तःक्रियाएं और सामाजिक संबंध संसार भर के साथ खुले है। अब लोग समाज की कई परिभाषा करने लगे है। यह सोचा जा रहा है कि एक वैश्वीय समाज की कल्पना की जा सकती है।

आज वैश्वीकरण को देखे तो पाएगें कि इसने हमारे समक्ष स्थानीय वैश्विक बाजार निर्मित कर दिए हैं इन बाजारों में हमें डेनमार्क के सेब दिखाई देगें, इजराइल के अंगूर मिल जाएगें और दुनियाभर के कॉस्मेटिक सामान पर्याप्त मात्रा में बिक्री के लिए हमें मिल जाएगा। सुपर बाजार या गांव की सहकारी समिति इस बात को बताते है कि सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया आज दुनिया भर में बहुत तेज हो गई है दूसरे देशों के लोग, एक ऐसी जटिल आर्थिक व्यवस्था में बंध गए है कि इन्हें अलग करके समझा ही नहीं नहीं जा सकता। बाजार में हमारे देश के विभिन्न बाजारों और अंचलों की वस्तुएं भी पर्याप्त मात्रा में बिक्री के लिए अटी पड़ी हैं। ये सभी वस्तुएं संस्कृति की भी है, कला की भी है और दिन प्रतिदिन काम में आने वाली भी है। देखा जाए तो आज की दुनिया अन्योन्याश्रितता की है।

यह सब पिछले दो दशको में ही हुआ है और इसका एक कारण संचार साधनों में वृद्धि, सूचना तकनीक और आवागमन के साधन है। सेटेलाइट संचार व्यवस्था का विकास इतनी तीव्र गति से हुआ है कि दुनिया के लोग एक–दूसरे के साथ आराम से संपर्क कर सकते है। इन सब प्रक्रियाओं को जो दुनिया भर के सामाजिक संबंधों को गहरा और घनिष्ठ कर रहो है, इन प्रक्रियाओं को अवधारणात्मक रूप में समाजशास्त्री वैश्वीकरण कहते है।

वैश्वीकरण एक ऐसा पहलू जो संपूर्ण विश्व को एक ग्राम के परिप्रेक्ष्य में देखता हैं जहाँ आर्थिक से लेकर सामाजिक हर पहलू तक विश्व के समस्त देश एक दूसरे को मिला–जुला पाते हैं परंतु समकालीन परिप्रेक्ष्य में तकनीकी के आविष्कार एवं प्रतिस्पर्धा ने मनुष्य को इतना व्यस्त कर दिया हैं कि व्यक्ति स्वयं के लिए एवं परिवार के लिए समय नहीं निकाल पा रहा हैं। अतः व्यक्ति आज अपनी अस्मिता ढूँढ रहा हैं। उसके सामने वैधता का संकट उभर कर आया हैं। मानव इतना भौतिकवादी हो गया हैं कि परिवार के लिए अवकाश नहीं हैं जिसकी अभिव्यक्ति आज हम टूटते परिवारों में देख सकते हैं। अतः सामाजिक ताने–बाने को सहेजने की जरूरत महसूस हुई हैं।

वर्तमान में पर्यटन के नए–नए आयाम उभर कर सामने आए हैं। भारत के परिप्रेक्ष्य से देखा जाए तो निश्चित रूप से हम कह सकते हैं कि इस क्षेत्र में अपार संभावनाएं हैं। पर्यटन को आज संस्कृति के साथ जोडकर देखा जाता हैं। अतः हमारी संस्कृति को नए रूप से पेश करने की कोशिश हो रही हैं परंतु साथ ही ध्यान रखना होगा कि संस्कृति अक्षुण्ण बनी रहे और वर्तमान प्रतिस्पर्धा मे और निखर कर सामने आए। पश्चिमी संस्कृति का प्रभाव हम निश्चित रूप से हमारी संस्कृति पर हावी होते देख सकते हें जो हमें खान–पान, वेशभूषा, भाषा आदि में स्पष्ट दिखता हैं, परंतु ध्यान रखना होगा कि जो पर्यटक विदेशों से आते हैं उनकी संस्कृति के सकारात्मक पहलूओं को हम ग्रहण करे नहीं तो लिव–इन–रिलेशनशिप, रेव पार्टियाँ आदि न जाने कितने ही मुद्दे हमारी संस्कृति में आत्मसात् होने को आतुर हो जाएंगें, जो समकालीन परिप्रेक्ष्य में हमें दृष्टिगोचर होता हैं।

अतः वैश्वीकरण ने जहाँ प्रतिस्पर्धा बढाकर मनुष्य को व्यस्त कर दिया हैं तथा जिस प्रकार से पर्यटन के नए आयाम सामने आए हैं उसके सकारात्मक पहलूओं के साथ–साथ नकारात्मक पहलूओं पर भी हमें ध्यान देना होगा। पर्यटन उद्योग जहाँ एक तरफ सरकारी कोष में विदेशी धन बढ़ाता हैं वहीं दूसरी और इसी पर्यटन से एड्स जैसी बीमारियो को फैलने का विस्तृत क्षेत्र भी उपलब्ध करवाता हैं। यूरोपीयन कमीशन की परिभाषा–यूरोपीयन कमीशन ने वैश्वीकरण को अनिवार्य रूप से एक प्रक्रिया स्वीकारा है। वह कहता है कि इस प्रक्रिया में सामाजिक और सांस्कृतिक पहलू भी होते है पर मूल रूप से यह अपने विमर्श में आर्थिक है। कमीशन के शब्दों में–"यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा विभिन्न देशों के बाजार और उत्पादन पारस्परिक रूप से एक दूसरे पर अधिक निर्भर रहते है और इस निर्भरता का कारण व्यापार तथा वस्तुओं की गतिशीलता और पूंजी तथा तकनीकी तंत्र का प्रवाहित होना है।"

वैश्वीकरण और इसके मुख्य लक्षण

समाजशास्त्रियों ने वैश्वीकरण के कतिपय मुख्य लक्षणों की पहचान की है। इसके कई कारण हैः समय और स्थान का सिकुड़ना, राजनीति और शक्ति सम्बन्ध, तथा आर्थिक आदान–प्रदान। पिछले पृष्ठों में हमने कई परिभाषाओं का उल्लेख किया है जो वस्तुतः वैश्वीकरण के लक्षणों को बताती है। मेलकॉम वाटर्स (2000) वैश्वीकरण के दो मुख्य लक्षणो की चर्चा करते हैं : आर्थिक और सामाजिक–सांस्कृतिक। ये दो लक्षण अपने विस्तार में इतने भारी हैं कि सम्पूर्ण संसार को एक व्यवस्था के रूप में स्थापित करने का प्रयास करते हैं। यहां हम इन लक्षणों का सिलसिले से विवरण देंगे।

दुनिया एक शापिंग कॉम्पलैक्स (आर्थिक वैश्वीकरण)–

बहुत पहले कार्ल मार्क्स ने कहा था कि कामगारों का कोई देश नहीं होता। मार्क्स का प्रबन्ध बहुत सामान्य था। उनका कहना था कि पूंजीवाद प्रत्येक स्थिति में अपना विस्तार करना चाहता है और आवागमन तथा संचार सुविधाओं के विस्तार के साथ प्रत्येक युग में पूंजीवाद अपना विस्तार करेगा। निश्चित रूप से पूंजीवाद आर्थिक वैश्वीकरण का एक सशक्त साधन है। यह पूंजीवाद ही है जो वितीय बाजारों, वस्तुओं, श्रमिकों और विनियम सस्थाओं को स्थापित करता है। यह मार्क्स का ही बुनियादी सिद्धान्त था कि दुनिया भर के मजदूर संगठित होकर श्रमिकों की एकता को स्थापित करेंगे। इस दृष्टि से आर्थिक वैश्वीकरण की बुनियाद मार्क्स के सिद्धान्त में ही देखी जा सकती है।

यह बहुत स्पष्ट है कि जब हम आर्थिक वैश्वीकरण की व्याख्या करते है तो अनिवार्य रूप से हमारी चर्चा का केन्द्र पूंजीवाद होता है। जब समाजशास्त्री इस सम्पूर्ण समस्या को उठाते हैं जो वे आधुनिकता का उल्लेख अवश्य करते है। एक स्थान पर एंथेनी गिडिन्स ने कहा है कि वैश्वीकरण वस्तुतः आधुनिकता की उपज है। आधुनिकता में पूंजीवाद, राज्य की शक्ति, प्रजातंत्र तथा सैनिक शक्ति होते है। इस तरह की आधुनिकता संकट को भी प्रदान करती है। आधुनिकता और पूंजीवाद का विस्तार

तकनीकी तंत्र की क्रांति द्वारा सम्भव हुआ है।

सामाजिक–सांस्कृतिक वैश्वीकरण–

वैश्वीकरण के आर्थिक पहलू की अपेक्षा इसके सामाजिक–सांस्कृतिक पहलू अधिक जटिल और पेचीदा हैं। यह इसलिये कि इसके अन्तर्गत हम लगभग सम्पूर्ण मानव–जीवन को सम्मिलित करते हैं। समाज वैज्ञानिकों के परिवार में, सबसे पहिले समाजशास्त्रियों ने वैश्वीकरण की व्याख्या एक नपे–तुले रूप में करने का प्रयास किया। इन समाज वैज्ञानिकों में समाजशास्त्री अग्रणी हैं। समाजशास्त्रियों में गिडेन्स, रोबर्स्टन और मेलकॉम चोटी के विश्लेषक हैं, जिन्होंने वैश्वीकरण को इसकी प्रारम्भिक अवस्था में ही परिभाषित किया। यह परिभाषा गैर–आर्थिक पहलुओं की थी, यानी समाज–शास्त्रीय थी। एंथेनी गिडिन्स ने कहा कि वैश्वीकरण एक प्रकार से दुनिया भर के लोगों का सामाजिक सम्बन्धों का एक ताना बाना है। दूर–दराज क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के व्यवहार पर दुनिया भर का प्रभाव देखने को मिलता है। रोबर्टसन (2000) जहां यह कहते हैं कि वैश्वीकरण में समय और स्थान सिमट गये हैं वहीं वे कहते हैं कि अब दुनिया भर के लोगों में यह चेतना आ गई है कि वे एक विशाल संसार के भागीदार हैं। यह व्यक्तिनिष्ठ चेतना वैश्वीकरण की बहुत बड़ी उपलब्धि है। रोबर्टसन कहते हैं–"एक प्रक्रिया के रूप में वैश्वीकरण की अवधारणा का सम्बन्ध संसार का सिमट जाना है और यह दुनिया एक है इसकी चेतना का गहरा जाना है। वैश्वीकरण अपने आपमें सम्पूर्ण विश्व की चेतना है।"

सांस्कृतिक वैश्वीकरण–नई दुर्व्यवस्था–

आर्थिक और राजनीतिक वैश्वीकरण की अपेक्षा सांस्कृतिक वैश्वीकरण अधिक हुआ है। आधुनिक काल के आने से पहले धर्म का वैश्वीकरण सबसे अधिक था। बौद्ध, कन्फ्यूसियस, ईसाई और हिन्दू धर्म विश्व धर्मों की श्रेणी में आते थे। ये धर्म विश्व व्यापी थे, इनका कोई अपना देश नहीं था। बौद्ध धर्म का उद्गम भारत था, लेकिन इसकी व्यापकता एशिया के कई देशों में थी। इस्लाम मध्य ओर पूर्वी एशिया के बाहर अफ्रीका तक में था। कमोबेश यही स्थिति ईसाई धर्म की थी। जब आधुनिक युग आया तब प्रजातंत्र और पूंजीवाद भी आयें। बुद्धि संगतता, शिक्षा और विज्ञान ने धर्म के वैश्वीकरण को हाशिये पर ला दिया। अब इस युग में धर्म राज्य से पृथक हो गया।

आर्थिक वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप दुनिया में एक सांस्कृतिक और सामाजिक क्रांति आई है। अमेरिका का एक सफेद पोश इससे इतना ही प्रभावित हुआ है जितना मास्को और टोकियों का एक कार्यकारी। इसका मतलब हुआ है कि जो कुछ हम अमेरिका के लिये करते हैं, वह अमेरिका स बाहर भी वैध है। हमारी खबरें वस्तुतः विश्व की खबरें है।

नवीन वैश्वीय सांस्कृतिक निगम–

सांस्कृतिक बाजार में वस्तुओं को कौन पहुंचाता है। जेमेसन (1987) ने तर्क दिया है कि यह सब काम पूंजीवाद करता है। पूंजीवाद अपने विस्तार के लिये सब कुछ कर सकता है। आज की संस्कृति की उपज पूंजीवाद करता है। इसके उत्पादन के लिये बड़े–बड़े निगम होते है। संस्कृति उत्पादन का कार्य बड़ा जटिल है। दुनिया में संस्कृति के जो विभिन्न प्रतिमान है। उन्हें ये निगम नजर अन्दाज नहीं कर सकते। अगर मेक्डानल्ड अमेरिका में अपने मेन्यू में मेमने के कोफ्ते सम्मिलित करता है, तो ऐसा वह भारत के अहमदाबाद में नहीं कर सकता। यहां तो उसे शाकाहारी कोफ्ते की देने पड़ेंगे। सांस्कृतिक निगम स्थानीय अन्तर को कतर–ब्यौंत करके अपने परिवेश में बैठा लेते हैं। थियोडोर लेविट ने सांस्कृतिक निगमों की इस अनुकूलता की प्रकृति का विवरण दिया है। इसे वे एथनिसीटी का वैश्वीकरण कहते है। इसका बहुत अच्छा दृष्टान्त विभिन्न देशों में एथनिक बाजारों का चल निकलना है। यह वैश्वीय स्टेन्डर्डाइजेशन है। हमारे यहां महानगरों की होटलों में चीनी खाना या इटालियन खाना मिलना सामान्य बात है। लंदन में पकोड खमण या दाल–बाटी की दुकानें पाना सहज नहीं है। थियोडोर लेविट (2000) लिखते हैं–सभी जगज चीनी खाना, पिज्जा ब्रेड, ग्रामीण या स्थानीय और पश्चिमी संगीत, पिजा और जूस मिलना सामान्य बात है। इस तरह का एथनिक खाना वैश्वीकरण की भाषा में विशिष्ट खाना कहा जाता है और वैश्वीकरण कभी भी यह अर्थ नहीं है कि इसमें खण्डिता नहीं होती। इसके विपरीत, वैश्वीकरण का मतलब होता है स्थानीय सांस्कृतिक पदार्थों को दुनिया भर में पहुंचाना।

वैश्वीकरण–स्थानीय सम्बन्ध–

वैश्वीय संस्कृति सामान्यतया पश्चिमी संस्कृति है। आधुनिकीकरण ने दुनिया भर की संस्कृतियों को मिश्रित करने का प्रयास किया है फिर भी इस मिश्रम में पश्चिमी और अमेरिकी संस्कृतियों की प्रधानता होती है। ऐसी अवस्था में जब यह वैश्वीय संस्कृति स्थानीय संस्कृति के सम्पर्क में आती है तब वैश्वीय संस्कृति को वैधता पाने के स्थानीय संस्कृति के साथ अनुकूलन अवश्य करना पड़ता है। ईस्लाम के उम्मा को कभी भी नजरअन्दाज नहीं किया जा सकता है। किसी पंडित की उपेक्षा नहीं की जाती। जब मानव अधिकार की बात उठती है तब स्थानीय संस्कृति के तत्वों के साथ किसी न किसी प्रकार का अनुकूलन अवश्य करना पड़ता है। सांस्कृतिक वैश्वीकरण के संदर्भ में मुख्य मुद्दा वैश्वीय–स्थानीय संस्कृति के सम्बन्धों का है। यहां हमें इस तथ्य को कभी नहीं भूलना चाहिए कि वैश्वीकरण अपनी बुनियाद में बहुलवादी है और इस कारण वैश्वीय संस्कृति में पकोड़े भी है, साफा और पगड़ी भी है। यह वैश्वीय और स्थानीय विभिन्नता ही, इस सम्पूर्ण प्रक्रिया को बहुलवादी बनाती है।

यह सही है कि वैश्वीकरण समय और स्थान को दबाकर छोटा कर देता हैं इलेक्ट्रोनिक मीडिया की भूमिका इस क्षेत्र में बड़ी महत्वपूर्ण है। लेकिन एक और रूचिकर बात आलोचकों ने रखी है। वे कहते हैं कि विभिन्न देशों के भूगोल तो सिमट गये है, दूरियां तो कम हो गई हैं लेकिन इसने स्थानीय और आंचलिक स्तर पर एक नया पुनर्जागरण अवश्य पैदा कर दिया है। अब स्थानीय स्तर की समस्याओं को वैश्वीय स्तर पर देखा जाने लगा है। लोग स्थानीय अर्थव्यवस्था और स्थानीय आर्थिक रणनीति को बनाने लगे हैं। वैश्वीकरण अर्थ व्यवस्था में देखने को मिलता है। अब जमीनी स्तर पर स्थानीय परिस्थितियों को देखकर योजना बनाने लगे, अर्थ विकास के कार्यक्रम तैयार करने लगे है।

केवीन रोबीन्स ने बहुत स्पष्ट शब्दों में कहा है कि वैश्वीय और स्थानीय संस्कृति की अन्तःक्रिया को कभी भी अवरूद्ध नहीं किया जा सकता। वैश्वीकरण कभी भी अस्थानीयकरण नहीं करता। यह सही है कि आज की दुनिया एक मीडिया दुनिया है लेकिन इस दुनिया के कभी भी स्थानीय दुनियां को काटा नहीं जा सकता। केवीन रोबीन्स (1999) लिखते हैं, "स्थान और संस्कृति की जो जमीनी हकीकत है उसकी हम कभी भी उपेक्षा नहीं कर सकते। उन्हें नजर अन्दाज नहीं कर सकते। वैश्वीकरण का सम्बन्ध वस्तुतः पुनःस्थानीय से है। विश्व और स्थानीयता के सम्बन्धों से जो नई चीज उभरती है वह स्थानीयता को बहुलवादी बनाती है।"

केवीन रोबीन्स के तर्क का आधार यह है कि वैश्विकता और स्थानीयता की अन्तःक्रिया में जहां वैश्वीयता से संस्कृति के बहुत से पहलू समृद्ध होते है, वहीं इस वैश्वीयता अनिवार्य रूप से स्थानीयता भी ताकतवर बनती है। यह भ्रम दूर हो जाना चाहिए कि वैश्वीयता अनिवार्य रूप से स्थानीयता को खा जाती है। ऐसा कुछ नहीं है लेकिन कभी–कभी यदि स्थानीयता कमजोर होती है, उसकी नींव डगमगाती है, तब यह भय बना रहता है कि कहीं वह कमजोर होकर विस्मृति की गर्त में न खो जाये। कुछ आलोचक वैश्वीय–स्थानीय सम्बन्धों के बारे में एक और रूचिकर बात करते है। उनका कहना है कि जिसे हम स्थानीयता से मिलकर एक सांस्कृतिक क्षेत्र या अंचल को बनाती है। के. एस. सिंह का प्रोजेक्ट पीपूल ऑफ इण्डिया के अनुसार भारत में 91 सांस्कृतिक क्षेत्र है। वैश्वीयता ने सांस्कृतिक क्षेत्रों को अपना बाजार बना दिया है। प्रत्येक क्षेत्रीय आवश्यकता के अनुरूप सांस्कृतिक उत्पाद तैयार किया जाता है। और इसे स्थानीय बाजार में बेच दिया जाता है। ओलिवेती कार्लो (2000) कहते है कि जैसे ही कोई बाजारवाद और स्थानीय बाजार में भरपूर चले जाने पर वहां इस उत्पाद के कारखाने भी खोल दिये जाते हैं। वैश्वीकरण स्थानीय बाजार का एक अभिन्न अंग बन जाता है। इस भांति कोरपोरेट निगम सशक्त रूप से स्थानीय संस्कृति के साथ अन्तःक्रिया करता है।

वैश्वीय–स्थानीय सम्पर्क चाहे मीडिया के माध्यम से हो, या बाजार के माध्यम से, खतरनाक भी है। कुछ आलोचकों का कहना है कि कभी–कभी वैश्वीय संस्कृति और बाजार इतने प्रभावशाली होते हैं कि वे स्थानीयता को समाप्त कर देते हैं। ऐसा भी देखा गया है कि इस सम्बन्ध के परिणामस्वरूप स्थानीय भाषा, तीज–त्यौहार और रीति–रिवाज ओझल हो जाते है। कुछ नये सांस्कृतिक प्रतिमान जिनका उद्गम अन्य देशों में होता है, स्थानीय स्तर पर प्रभुत्वशाली हो जाते हैं। कहीं–कहीं तो एक देश में, राज्यों की स्थानीयता दूसरे राज्य पर हावी हो जाती है। वैश्वीय और स्थानीय सम्बन्धों का यह मुद्दा बहुत ही संवेदनशील है। एक ओर वैश्वीय संस्कृति होती है, उदाहरण के लिए पश्चिमी संगीत नृत्य और पहनावा। दूसरी और देशोय या राष्ट्रीय संगीत और पहनावा, और स्थानीय संगीत और नृत्य। संस्कृति ये तीनों स्तर जो सापेक्षित है, बाजार और मीडिया के माध्यम से सम्पर्क में आते है। यह सम्पर्क कई क्षेत्रों में अनुकूलन पैदा करता है और कहीं तनाव। तनाव के कारण कई देशों में सांस्कृतिक वैश्वीकरण के खिलाफ आन्दोलन भी उठने लगे है। इसे हम स्थानीयता द्वारा दी गई वैश्वीय संस्कृति को चुनौती कहते हैं। आगे चलकर हम इस चुनौती पर थोड़ा विस्तार से लिखेंगे। यहां यही कहना पर्याप्त होगा कि वैश्वीय और स्थानीय संस्कृति के सम्बन्ध किसी भी अर्थ में सामान्य नहों कहे जा सकते। ये जटिल हैं, और विवादास्पद भी।

पर्यटन एवं वैश्वीकरण का सम्बन्ध–

पर्यटन एक अवकाश, एक मौजमस्ती संबंधी कार्यकलाप है जो रोजमर्रा के हमारे बंधे हुए नियमित एवं सुसंगठित कार्य और दैनिक क्रियाओं से भिन्न होता है। इसमें व्यक्ति अपने सामान्य निवास आर कामकाज के स्थान को छोडकर दूसरे स्थान पर जाता है। पर्यटन जहाँ एक ओर सामाजिक घटनाओं का एक जटिल समूह है, वहाँ इसे आजकल एक उद्योग का रूप मिल चुका है। समाजशास्त्री पर्यटन के लिए प्रेरित करने वाले और पर्यटन के स्थानों की ओर आकर्षित करने वाले दोनों कारको का अध्ययन करते है। इन कारकों में रोजमर्रा के कार्यों की थकान मिटाने, आध्यात्मिकता, शिक्षा, स्वास्थ्य और काम–भावना के साथ–साथ नए स्थानों को देखने की जिज्ञासा, आबोहवा, आमोद–प्रमोद, खेलो का आकर्षण आदि हो सकता है।

पर्यटन का दूसरा पहलू यह भी है कि आज हमारे गांवों को नक्शे पर उभरने का मौका मिला हैं। आज ग्रामीण पर्यटन के माध्यम से हमारे ग्रामों की संस्कृति को निखारने

का प्रयत्न किया जा रहा हैं परंतु ये ध्यान रखना होगा कि कोई अन्य संस्कृति इन पर हावी न हो पाए, गांवों की संस्कृति प्रदूषित न हो।

संस्कृति नकल से नही चलती उसे अपने स्तर पर अपने ढंग से रचनाशील बने रहना होता हैं यदि हम हमारी संस्कृति को ज्यों का त्यों रखना चाहेंगें तो वह म्यूजियम भर बनी रहेंगी किंतु अगर संस्कृति के उत्कृष्ट पक्षों को हम हमारे आम जीवन से जोडकर उसे विकसित करना चाहेंगें ता वह प्रगति करेगी। पश्चिम संस्कृति का जिस तरीके से दबदबा बढता जा रहा हैं हमें हमारी संस्कृति के आधुनिक स्वरूप की तलाश करनी होगी।

वैश्वीकरण एक ऐसा पहलू जो संपूर्ण विश्व को एक ग्राम के परिप्रेक्ष्य में देखता हैं जहाँ आर्थिक से लेकर सामाजिक हर पहलू तक विश्व के समस्त देश एक दूसरे को मिला–जुला पाते हैं, परंतु समकालीन परिप्रेक्ष्य में तकनीकी के आविष्कार एवं प्रतिस्पर्धा ने मनुष्य को इतना व्यस्त कर दिया हैं कि व्यक्ति स्वयं के लिए एवं परिवार के लिए समय नहीं निकाल पा रहा हैं। अतः व्यक्ति आज अपनी अस्मिता ढूँढ रहा हैं। उसके सामने वैधता का संकट उभर कर आया हैं। मानव इतना भौतिकवादी हो गया हैं कि परिवार के लिए अवकाश नहीं हैं जिसकी अभिव्यक्ति आज हम टूटते परिवारों में देख सकते हैं। अतः सामाजिक ताने–बाने को सहेजने की जरूरत महसूस हुई हैं।

REFERENCES

1. गिडिन्स,एन्थोनी; (2002) "रनव वर्ल्ड : हाऊ ग्लोबलाइजेशन इज रिशेपिंग ऑवर लाइव्स", लंदन, प्रोफाइल बुक लिमिटेड, पृ.सं. 36–37.

2. कैनेडी ब्रूस (31 अगस्त, 2010) "डायस्पोरा के आर्थिक प्रभाव", रोज वित्त 23 फरवरी, 2011.

3. दोषी,एस.एल.,व जैन,पी.सी.; (2001) ''उत्तर आधुनिकतावाद, जयपुर, रावत पब्लिकेशन।

4. लेविट, थियोडोर; (2002) ''द ग्लोबलाइजेशन ऑफ मार्केट'', सेन फ्रासिंस्को, जॉसी–बॉस, पृ.सं. 18–19।

5. वॉटर्स, मैलकाम; ''ग्लोबलाइजेशन'', लंदन, राउटलेज, पृ.सं. 74–76, 2002.

6. स्केलअर और डनिंग, रिजन, ग्लोबलाइजेशन एण्ड द नॉलेज बेस्ड इकॉनॉमी, रटजर पब्लिकेशन, 2002.

7. गिलपिन,रॉबर्ट; (2001) ''ग्लोबल पॉलिटिकल इकोनोमी'', न्यू जर्सी, यू.के, प्रिनस्टाइन यूनिवर्सिटी प्रेस, पृ.सं. 232–234.

8. पील, (1997) ''बियोन्ड बोर्डरस्'' ईपीडब्ल्यू., जनवरी, 2, 1997.

9. रोबस्टर्न, (2000) ''द ग्लोबलाइजेशन ऑफ नथिंग'' लंदन, राउटलेज, पृ.सं. 111–112.